Gyanvividha, Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025 : PP-170-175

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-3 (July-Sept.) 2025
Page No.- 170-175
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

डॉ. संतोष कुमार
एम.ए.पी. एच. डी. (संस्कृत),
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर,
दरभंगा, बिहार.

Corresponding Author :

डॉ. संतोष कुमार
एम.ए.पी. एच. डी. (संस्कृत),
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर,
दरभंगा, बिहार.

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में गङ्गा

सारांश : उत्तर वैदिक काल में आर्यों के द्वारा गङ्गाघाटी को अपना मुख्य कर्मस्थली बनाये जाने के बाद जिस तीव्र गति से भारतीय संस्कृति का विकास और विस्तार हुआ है, उसी गति के साथ "गङ्गा" का महत्त्व बढ़ता गया और इससे संस्कृत साहित्य में प्रमुखता प्राप्त की।

गङ्गा का अध्यात्मीकरण लौकिक एवं साहित्यिक दोनों ही स्तरों पर हुआ। महाकाव्यों ने गङ्गा के अध्यात्मीकरण तथा महिमा-मण्डन की शुरुआत की, जिसे पौराणिक साहित्य ने शास्त्रीय आधार तथा व्यापकता प्रदान की। इस तरह गङ्गा को साहित्यिक आध्यात्मिक महत्त्व प्रदान करने में पौराणिक साहित्य का विशेष योगदान है।

बीज शब्द : नदीसूक्त, ऋग्वेद, ऐतरेयब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, वैतानसूत्र, निरुक्त, उणादिसूत्रम्, तैतरीय आरण्यक, कृत्यसार समुच्चय, बाल्मिकी रामायण, अमर कोष।

परिचय : गङ्गा नदी आर्यावर्त की संस्कृति की आधारशिला है। इसी के आधार पर यहाँ की सांस्कृतिक-कृतियाँ नियन्त्रित होती है। इसका जनजीवन सतत इसके द्वारा प्रभावित होता रहता है। जैसे यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति कहीं भी रहे, स्नान करने के अवसर पर गङ्गा-गङ्गा उच्चारण कर ही लेता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में गङ्गा के विषय में कही गयी बातों को प्रस्तुत कर रहे हैं। सबसे अधिक वर्णन पुराणों में पाया जाता है। पुराण साहित्य अत्यन्त प्राचीन है। जिसमें समय-समय पर नवीन विषयों का समावेश होता गया। अतएव इसका नवीन-नवीन संस्करण होता रहा। इस नवीन युग के विषयों को देखकर कतिपय आलोचक पुराण साहित्य को ही नवीन कहने लगे। दरअसल में ऐसी बात है नहीं। पुराणों की प्राचीनता वेद जैसी ही है।

साहित्य समीक्षा : वेद चार हैं जिनमें प्रथम स्थान ऋग्वेद को है। इसके

दशम मण्डल में एक सूक्त का नाम 'नदी सूक्त' है। इसमें भारतवर्ष के अनेक नदियों के साथ गङ्गा की स्तुति की गयी है :-

"इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वती
शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुदवृधे वितस्तया
र्जीकीये शुणुह्या सुषोमया।।"[1]

उपर्युक्त मन्त्र के अतिरिक्त "ऋग्वेद में एवं अन्य वेद की संहिताओं में कहीं भी गङ्गा का नाम नहीं आया है। परन्तु ऋग्वेद के छठे मण्डल में गाङ्य शब्द का प्रयोग आया है, जिसका अर्थ गङ्गा-सम्बन्धी है। तदनुसार ऋग्वेद में दो बार गङ्गा की चर्चा हुई है।"[2] ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में भी "एक स्थान पर गङ्गा का वर्णन स्पष्ट रूप, से आया है। वहाँ गङ्गा को एक दिव्य द्रव्य के रूप में चित्रित किया गया है।"[3]

यजुर्वेद के शतपथब्राह्मण में "भरतदौष्यन्ति के विजय को यमुना एवं गङ्गा के तट पर हुआ वर्णित किया गया है-

"एतद्विष्णोः क्रान्तम्। 'तेन हैतेन भरतो
दोष्यन्तिरीजे,
तेनेष्ट्वेमां व्यष्टिं व्यानशे । येयं भरतानां तदेतद्
गाथायाऽभिगीतम्-
अष्टसप्तीतं भरतो दौष्यन्तिर्यमुनामनु-
गङ्गायां वृत्रध्नेऽबध्नात् पञ्चपञ्चाशतं ह्यान्॥
इति ।"[4]

अर्थात् यह भारतवर्ष विष्णु के द्वारा अधिगृहीत है। इस पर दुष्यन्त के पुत्र भरत ने यज्ञ किया। यज्ञ के बाद उन्होंने शत्रुओं को नष्ट किया। जिसकी यह विजयगाथा प्रसिद्ध है:-

भरत दौष्यन्ति ने यमुना नदी के किनारे अठहत्तर हजार घोड़ों को बाँधा और गङ्गा नदी के किनारे पचपन हजार घोड़ों को बाँधकर विजय प्राप्त की थी।

शतपथब्राह्मण के उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि गङ्गा के किनारे स्वच्छ जल एवं मैदान तथा हरित भूमि मिलने के कारण सैन्य-पड़ाव डाला जाता था तथा नगर बसाया जाता था। वहाँ यज्ञ भी किया जाता था। जिसमें गङ्गाजल का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया जाता था।

वेद के सहायक ग्रन्थ 'वैतानसूत्र' में "सरस्वती नदी के साथ गङ्गा की भी चर्चा आई है।"[5] इसी प्रकार यास्काचार्य ने 'निरुक्त' में "गङ्गापद की व्युत्पत्ति लिखी है-**"गङ्गा गमनात्।"**

अर्थात् गङ्गा शब्द नदी के अर्थ में गमन के कारण प्रयुक्त हुआ। नदी वेग से चलती है। इसी गमनशीलता के कारण गङ्गा को यह नाम मिला, ऐसा अभिप्राय निरुक्तकार का है।"[6] शाकटायनप्रणीत 'उणादिसूत्र' में भी गङ्गापद की व्युत्पत्ति दिखाई गयी है-

"गन् गम्यद्योः-गम् गतौ अद्भक्षणे आभ्यां धातुभ्यां
गन् प्रत्ययः स्यात्।
यथा-गङ्गा अद्भः।

अर्थात् गम और अद् धातु से गन् प्रत्यय होता है। जैसे-गम्+ग+टाप्= गङ्गा। इसके अनुसार भी सतत गमनशीलता गुण के कारण ही इस नदी का नाम गङ्गा पड़ा।"[7]

"तैत्तिरीय आरण्यक में गङ्गा का वर्णन मिलता है, जहाँ इसकी महत्ता एवं उपयोगिता के साथ इसका गुणगान भी किया गया है।"[8] स्मृतिग्रन्थों में तो गङ्गा की महिमा बहुधा मिलती है। जैसे-दशहरापर्व के अवसर पर ही गङ्गा पृथ्वी पर पधारी थी। इसलिए उस दिन इसमें स्नान करने से दस पाप छूट जाते हैं-

"ज्यैष्ठे मासि क्षितिसुतदिने शुक्लपक्षे दशम्यां
हस्ते शैलान्निरगमदियं जाह्नवी मर्त्यलोकम् ।
पापान्यस्यां हरति च तिथौ सा दशेत्याहुरार्याः
पुण्यं दद्यादपि शतगुणं वाजिमेधायुतस्य ॥"[9]

स्कन्दपुराण में भी दशहरा के अवसर पर गङ्गा स्नान से दस पापों का हरण बताया गया है-

ज्येष्ठे मासि क्षिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ।
हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता ॥

ये पाप कौन-कौन है इसका वर्णन भोजराजकृत 'राजमार्तण्ड' नामक धर्मशास्त्रीय निबन्ध ग्रन्थ में हुआ

है-

"पारुष्यमनृतञ्चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः ।
असम्बद्धप्रलापञ्च वाङ्मय स्यात् चतुविधम् ॥
अदत्तानामुपादनं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा कायिकं त्रिविधं मतम् ॥
पर द्रव्यष्वभिध्यानं मनसा अनिष्ट चिन्तनम् ।
वितथाभिनिवेशश्च मानसन्त्रिविधं स्मृतम् ॥"[10]

अर्थात् कायिक, वाचिक और मानसिक पाप दस प्रकार के होते हैं-

1. वाचनिक पाप चार प्रकार के होते हैं:-

(i) कठोर बोलना, (ii) झूठ बोलना, (iii) चुगली करना और (iv) ऊल-जलूल बकना।

2. कायिक पाप तीन प्रकार के होते हैं:-

(i) बिना दिये हुए परायी वस्तु ले लेना,
(ii) अविधिपूर्वक हिंसा करना और (iii) परस्त्रीगमन करना।

3. मानसिक पाप तीन प्रकार के होते है:-

(i) पराये धन लेने का सोचना (ii) दूसरों के अहित सोचना और (iii) व्यर्थ चिन्तन

शोध प्रक्रिया : वैदिक साहित्य के बाद वाल्मिकीय रामायण में गङ्गा का विस्तार से वर्णन हुआ है। वहाँ इसकी उत्पत्ति, कार्य, महात्म्य, क्षेत्र और स्तुति विस्तृत रूप से वर्णित हुए हैं।

अयोध्या से आगे "गङ्गा-सरयू-संगम का वर्णन किया गया है और उस संगम पर स्नान-दान का माहात्म्य भी वर्णित किया गया है।"[11] गङ्गा की उत्पत्ति के विषय में वाल्मीकि ने लिखा है:-

"भगवञ्छोनुमिच्छामि गङ्गा त्रिपथगां नदीम् ।
त्रैलोक्यं कथमाक्रम्य गता नदनदी पतिम् ।।"[12]

श्रीराम ने विश्वामित्रजी से पूछा-भगवन मैं यह सुनना चाहता हूँ कि तीन मार्गो से प्रवाहित होनेवाली नदी ये गङ्गाजी किस प्रकार तीनों लोकों में घूमकर नदों और नदियों के स्वामी समुद्र में जा मिली है।

चोदितो रामवाक्येन विश्वामित्रो महामुनिः ।
वृद्धिं जन्म च गङ्गाया वक्तुमेवोपचक्रमे ।

श्रीराम के इस प्रश्न द्वारा प्रेरित हो महामुनि विश्वामित्र ने गङ्गाजी की उत्पत्ति और वृद्धि की कथा कहना आरम्भ किया।

शैलेन्द्रो हिमवान् राम धातूनामाकरो महान् ।
तस्य कन्याद्वयं राम! रूपेणाप्रतिमं भुवि ।।

श्रीराम ! हिमवान नामक एक पर्वत है, जो समस्त पर्वतों का राजा तथा सब प्रकार के धातुओं का बहुत बड़ा खजाना है। हिमवान् की दो कन्याएँ हैं, जिनके सुन्दर रुप की इस भूतल पर कहीं तुलना नहीं है।

या मेरुदुहिता राम तुयोर्माता सुमध्यमा ।
नाम्ना मेना मनोज्ञा वै पत्नी हिमवतः प्रिया ॥

मेरु पर्वत की मनोहारिणी पुत्री मेना हिमवान की प्यारी पत्नी है। सुन्दर कटि प्रदेशवाली मेना ही उन दोनों कन्याओं की जननी है।

तस्यां भङ्गेयमभवज्जेष्ठा हिमवतः सुता ।
उमा नाम द्वितीयाभूत् कन्या तस्यैव राधव ॥

रघुनन्दन ! मेना के गर्भ से जो पहली कन्या उत्पन्न हुई, वही गङ्गाजी है। ये हिमवान् की ज्येष्ठ पुत्री हैं। हिमवान् की ही दूसरी कन्या, जो मैना के गर्भ से उत्पन्न हुई, उमा नाम से प्रसिद्ध है।

अथ ज्येष्ठां सुराः सर्वे देवकार्यचिकीर्षया ।
शैलेन्द्रं वरयामासुर्गङ्गा त्रिपथगां नदीम् ॥

कुछ काल के पश्चात् सब देवताओं ने देवकार्य की सिद्धि के लिए ज्येष्ठ कन्या गङ्गाजी को जो आगे चलकर स्वर्ग से त्रिपथगा नदी के रूप में अवतीर्ण हुई, गिरिराज हिमालय से माँगा ।

ददौ धर्मेण हिमवांस्तनयां लोकपावनीम् ।
स्वच्छन्दपथगां गङ्गां त्रैलोक्यहितकाम्यया ।

हिमवान् ने त्रिभुवन का हित करने की इच्छा से स्वच्छन्द पथ पर विचरनेवाली अपनी लोकपावनी पुत्री गङ्गा को धर्मपूर्वक उन्हें दे दिया।

प्रतिगृहय त्रिलोकार्थे त्रिलोकहितकाङ्क्षिणः ।
गङ्गामादाय तेऽगच्छन् कृतार्थेनान्तरात्मा ॥

तीनों लोकों के हित की इच्छावाले देवता त्रिभुवन की भलाई के लिए गङ्गाजी को लेकर मन ही मन कृतार्थता का अनुभव करते हुए चले गये।

या चान्या शैलदुहिता बन्याऽऽसीद रघुनन्दन ।

उग्रं सुव्रतमास्थाय तपस्तेपे तपोधनम् ॥

रघुनन्दन ! हिमालय की जो दूसरी पुत्री उमा (पार्वती) थी, वह उग्र तपस्वियों में श्रेष्ठ हो गयी।

एते शैलराजस्य सुते लोकनमस्कृते ।
गङ्गा च सरितां श्रेष्ठा उमादेवी च राघव ॥

रघुनन्दन ! उस प्रकार सरिताओं में श्रेष्ठ गङ्गा तथा भगवती उमा ये दोनों गिरिराज हिमालय की कन्याएँ हैं। सारा संसार इनके चरणों में मस्तक झुकाता है।

गङ्गा के पर्यायवाची शब्दों को अमरकोष में इस प्रकार दर्शाया गया है-

"गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनगा सुरनिम्नगा ।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ।।

अर्थात् गङ्गा के आठ नाम हैं- 1. गङ्गा, 2. विष्णुपदी (भगवान विष्णु के चरण-कमल से निकलनेवाली), 3. जहनुतनया जहनुमुनि की पुत्री जाह्नवी, 4. सुरनिम्नगा (देवनदी), 5. भागीरथी (भगीरथ के द्वारा लायी हुई), 6. त्रिपथगा (तीन मार्गो वाली), 7. त्रिस्रोता (तीन प्रवाहवाली) और 8. भीष्मसू (भीष्म को जन्म-देनेवाली)।"[13]

महाभारत प्राचीन भारतीय साहित्य का विश्वकोष है। इसमें गङ्गा का वर्णन दर्जनों स्थानों पर विस्तृत रूप से आया है। भीष्म के माता के रूप में इसके क्रूर और उदात्त चरितों को वर्णित किया गया है। इसकी उत्पत्ति, विराट स्वरुप एवं अमृतस्वरूप में दिखाया गया है। इनके महात्म्यों को संकलित कर पुराणकार ऋषियों ने "इतिहास समुच्चय नामक ग्रन्थ के पांचवे अध्याय में प्रस्तुत किया है। जिसका नाम 'गङ्गामहात्म्योपाख्यान' है। इसमें गङ्गा के महात्म्य को सरल शब्दों में कहा गया है कि जैसे-

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात् तथा गङ्गेति कीर्तनात् ।
पुनात्यपुण्यान् पुरुषान् शतशोऽथ सहस्त्रशः ॥

अर्थात् गङ्गा के दर्शन, स्पर्श, पान और नाम कीर्तन में से किसी एक प्रकार को भी जो व्यक्ति अपना लेता है, उसको सैकड़ों सहस्त्रों पापों से गङ्गा छुड़ा लेती है।"[14]

आदि पुराण के अनुसार "गङ्गा भूमण्डल पर उसी दिन आयी जिस दिन सत्ययुग का शुभारंभ हुआ था।

वैशाख शुक्लपक्षे तु तृतीयायां युधिष्ठिर ।
यवान् उत्पादयामास युगञ्चारब्धान् कृतम् ॥
ब्रह्मलोकात् त्रिपथगां पृथिव्यामवतारयत्।
तस्यां कार्यों यवैर्होमो यवै विष्णुं समर्चयेत् ॥

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को ब्रह्मा ने जौ की सृष्टि की और सत्युग का आरम्भ किया तथा ब्रह्मलोक से गङ्गा नदी को पृथ्वी पर उतारा।"[15]

भविष्य पुराण में गङ्गा का ध्यान इस प्रकार आया है कि उसे किसी भी देवता के रूप में, मूर्तिमती देखा जाय:-

"चतुर्भुजां त्रिनेत्राञ्च सर्वावयवभूषिताम् ।
रत्कुम्भां सिताम्भोजां वरदामभयप्रदाम् ॥
श्वेतवस्त्रपरीधानां मुक्तामणिविभूषिताम् ।
तेतो ध्यायेत् सुरुपाञ्च श्वेतच्छत्रोपशोभिताम् ॥
चामरैर्वीज्यमानाञ्च चन्द्रायुतसमप्रभाम् ।
सुप्रसन्नां सुवदनां करुणार्द्रनिजान्तराम् ॥
सुधाप्ला वितभूपृष्ठयमार्द्रगन्धानुलेपनाम् ।
त्रैलोक्यनमितां गङ्गां देवादिभिरभिष्टुताम् ॥
दिव्यरूपविभूषाञ्च दिव्यमाल्यानुलेपनाम्।

उपर्युक्त ध्यान में गंगा को एक दिव्य नारी के रूप में भक्तिभाव से ध्यान करने का स्वरूप खींचा गया है। जिसमें उनके चार हाथ हैं जिनमें क्रमशः रत्नकलश, श्वेतकलश, श्वेतकमल, वरमुद्रा एवं अभयमुद्रा दिखाया गया है। वे उजली साड़ी पहनी हुई है। मोती और मणियों से शोभित हैं। उजले छत्र धारण की हुई है। वे दश सहस्त्र चन्द्र की कान्ति से चमचमा रही है। उन्हें दो सुन्दरी उजले चावॅर से बीज रही है। उनका मुख प्रसन्न है। दया से परिपूर्ण है। अमृत से पृथ्वी को सींच रही है। गीले सुगन्धित उत्यों से लिपी हैं। तीनों लोकों से वृन्दित तथा देवों से स्तुत हैं। इनका स्वरूप दिव्य है, आभूषण दिव्य है, माला और चन्दन भी दिव्य ही हैं।"[16]

उपर्युक्त ध्यान में मकरवाहना या मत्स्यवाहना विशेषण का उल्लेख नहीं हुआ है, जो कि अन्य पुराणों में मिलता है। अर्थात् गङ्गा का वाहन मकर या मछली है वराहपुराण में गङ्गा का नाम स्तोत्र आया है। जहाँ

इसके एक सौ नाम बताये गये हैं, जिनमें एक नाम मकरवाहिनी दिया गया है।

श्रीमद्भागवत एवं ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार "गङ्गा नदी विष्णु भगवान को अत्यन्त प्रिय है। इसलिए दोनों में एकरूपता आ गयी है। अर्थात् गङ्गा नदी को विष्णु स्वरुप माना गया है।"[17]

स्कन्धपुराण के अनुसार "गङ्गा से बढ़कर कोई तीर्थ ही नहीं है।" इसके एक-एक स्नान से अनन्त पुण्य होता है और पाप कटते हैं। पुराण के अनुसार गङ्गा हिमालय की पुत्री है। सुमेरु पर्वत की कन्या मेनका गङ्गा की माता कही गयी है। इसी मेनका की दूसरी पुत्री पार्वती है। वायुपुराण के अनुसार "पहले गङ्गा केवल स्वर्ग में थी। राजा भगीरथ ने अपने तपोबल से अपने पितरों के उद्धारार्थ इसे पृथ्वी पर लाया।"[18]

गङ्गा शिव की पत्नी है क्योंकि जब यह स्वर्ग से गिरी थी तब सारी पृथ्वी इसके प्रवाह वेग से कहीं बह न जाय इसलिए शंकर ने इसे अपनी जटा में रोक रखा था।

श्री मद्भागवत के अनुसार "गङ्गा की उत्पत्ति हिमालय के सुमेरु पर्वत पुत्री मनोरमा में हुई। तब देवताओं ने हिमालय से प्रार्थना की कि हमें गङ्गा दे दें। हिमालय ने उन्हें अपनी पुत्री गङ्गा दे दी। वे इसे लेकर स्वर्ग चले गये। तब से गङ्गा का नाम सुरनदी हो गया। वामनावतार में भगवान वामन के अँगूठे से गङ्गा ध्रुवलोक में गिरी। तब देवमार्ग से सुमेरु पर्वत के ऊपर स्थित बह्मसदन में गिरी। वहाँ से यह चार, भागों में विभक्त हो गई और चारों दिशाओं में बहने लगी तथा समुद्र में जा गिरी।"[19]

मत्स्यपुराण के अनुसार "गङ्गा यों तो सर्वत्र दुर्लभ ही है, फिर भी इन स्थानों में अत्यन्त सुलभ हैं-1. गङ्गाद्वार, प्रयाग और गङ्गासागर संगम!

गङ्गाजल बहुत पवित्र माना जाता है। इसके जल में कीड़े नहीं पड़ते, शीशी में बन्द कर रखने पर पचीसों वर्ष में उसमें कोई विकार नहीं होता। अतएव उसके जल का उपयोग सभी धार्मिक कृत्यों में सुदूरवर्ती लोग भी करते हैं। पुराणों में लिखा है कि-

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद योजनाना शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अन्य सभी जल एक दिन के बाद दूसरे दिन वासी हो जाते हैं और उसे फेंक दिया जाता है, पर गङ्गाजल कभी वासी नहीं होता ।"[20]

वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं वर्ज्यं पर्युषितं जलम्।
न वर्ज्यं तुलसीपत्रं न वर्ज्यं जाह्नवी जलम् ॥

राजा भरत ने गङ्गा के तट पर अश्वमेध यज्ञ किया था, जिसका वर्णन शतपथ ब्राह्मण, ब्रह्माण्डपुराण, वायुपुराण और श्रीमद्भागवत पुराण में आया है। इस प्रकार पुराण साहित्य में गङ्गा का वर्णन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। पौराणिक साहित्य के बाद के साहित्यों में व्यापक रूप से गङ्गा का वर्णन पाया जाता है। महाकवि कालिदास ने अनेक स्थानों पर गङ्गा के महत्व को प्रातिपादित किया है। मेघदूत में मेघ को आकाशगङ्गा के जल से सींचने को कहा गया है। महाकवि कालिदास ने रघुवंश में जो गङ्गा-यमुना संगम का वर्णन किया है वह बहुत ही मार्मिक एवं यथार्थ है। आज भी संगम पर सितासित जल देखने को मिलते है। कभी-कभी यमुना की तरंगे जोर मारकर गङ्गा की तरंग को दबा देती है।

प्रसिद्ध आलंकारिक मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' में शब्दचित्र के उदाहरण में गङ्गा का वर्णन किया है। जिसमें केवल शाब्दिक छटा के साथ गङ्गा की वंदना की गयी है और उससे प्रार्थना की गयी है कि वह हमारी मन्दता को दूर करें।

निष्कर्ष : प्राचीन संस्कृत वाङ्मय के अन्तर्गत गङ्गा का संस्कृत भाषा के आदि ग्रन्थ वेद (ऋग्वेद) एवं वैदिक वाङ्मय में चर्चा, सूत्रग्रन्थों में गङ्गा, स्मृतियों में गङ्गा, रामायण एवं महाभारत में गङ्गा, भविष्यपुराण-वराहपुराण आदि में गङ्गा, मेघदूत-रघुवंश आदि काव्यों एवं मुद्राराक्षस-उत्तररामचरित आदि नाटकों में गङ्गा, काव्यशास्त्र आदि शास्त्रीय ग्रन्थों में गङ्गा वर्णित है। इसके अन्तर्गत त्रिविधताप को हरनेवाली गङ्गा स्वास्थ्य और सौमनस्य की दात्री,

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्पष्टता, सभी सम्प्रदायों में गङ्गा के लिए आदरभाव, संस्कृतिनिर्माण, महिमा, पौराणिक गङ्गावर्णन का वर्तमान सन्दर्भ इत्यादि वर्णित है।

इसलिए यह त्रैलोक्यपावनी है। यह संसार की रक्षा के लिए, देवकार्य के लिए और सम्पूर्ण संसार के लिए यह पापहारिणी गङ्गा प्रवाहित होती रहती है। इसलिए इसकी स्तुतियों से पौराणिक साहित्य भरे-परे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची :

1. ऋग्वेदमन्त्र 10, 30-6, सूक्त-76, मन्त्र-5.
2. ऋग्वेदमन्त्र-6, सूक्त-45, मं.-31.
3. ऐतरेय ब्राह्मण, अ.-8-14-4.
4. शतपथ ब्राह्मण का.-13, 10-5, ब्रा.-04, मंत्र- 11.
5. वैतानसूत्र-34-9.
6. निरुक्त, अ0-9-26, देवराज यज्वा, प्रकाशन गुरुमंडल ग्रन्थमाला, कलकत्ता-1952.
7. उणादिसूत्रम्-1-120 ले. महामहोपाध्याय श्री मद्ज्जल दत्त, टि. श्री जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्येण-प्रकाशन अत्थे गणेसा प्रेस-कलकता-1873.
8. तैतिरीयअरण्यक-2-20 ले. निर्मल वर्मा, राज कमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड–2000.
9. शब्दकल्पद्रुम-गङ्गा शब्द ले. राजा राधाकान्त देव बहादुर-1828-1858 इस्वी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी-1858.
10. कृत्यसार समुच्चयः-पृष्ठ 8 सं.-पं. श्री गंगाधर मिश्र शर्मा-चौखम्बा संस्कृत संसाथान-वि. सं.-2037.
11. वाल्मीकिरामायण-बालकाण्ड-23-5.
12. वाल्मीकि रामायण-बालकाण्ड-सर्ग-35-12 से 24
13. अमरकोष-1-10-31 ले. अमरसिंह, सं. चन्द्रधारी सिंह, मधुबनी, 1957.
14. इतिहास समुच्चय-पृष्ठ-25- प्र. श्री कृष्णदास, कल्याण, मुम्बई, संवत-1963.
15. शब्दकल्पद्रुम-गङ्गा शब्द ले. राजा राधाकान्त देव बहादुर-1828-1858 इस्वी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी-1858.
16. शब्दकल्पद्रुम-गङ्गा शब्द ले. राजा राधाकान्त देव बहादुर-1828-1858 इस्वी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी-1858.
17. श्रीमद्भागवत-सप्तमस्कन्ध,-14-29, अष्टम स्कन्ध-4-23-गीताप्रेस, गोरखपुर.
18. वायु पुराण-42-39 एवं 71-5, अ. रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री हिन्दी साहित्य- सम्मेलन, प्रयाग-1987.
19. शब्दकल्पद्रुम-गङ्गा शब्द ले. राजा राधाकान्त देव बहादुर-1828-1858 इस्वी रॉयल एशियाटिक सोसाइटी-1858.
20. स्कन्द पुराण-वैशाख महात्म्य-8-9 डॉ. शिवानन्द नौटियाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1994.

•